मंचीय कविता के बाज़ार में ग्राहक

रामअवतार बैरवा

कोई कुछ भी कहे, कितने भी दावे करे, मंचीय कविता के सुनहरे दिन अब लौटकर नहीं आने वाले। घटिया मनोरंजन और ओछे शब्दों से दर्शक और श्रोता अब ऊब चुके हैं । एक समय पर राजधानी दिल्ली में आयोजित लाल किला कवि सम्मेलन सुनने के लिए श्रोता दूर-दराज से आते थे । रात आठ बजे से शुरू होकर ये कवि सम्मेलन सुबह तक चलता था। श्रोता बहुत ध्यान से सारी रात एकटक कविताएं सुनते रहते थे। इस बरस मंच और हास्य जगत के बड़े कवि मौजूद पर थे पर वो अपने हिस्से के एक प्रतिशत भी श्रोता - दर्शक नहीं जुटा सके । कवि सम्मेलन के आरंभ में ही अशोक चक्रधर करारा व्यंग्य करते हुए चले गए कि मैं इस एतिहासिक भीड़ से अभिभूत हूं। पिछले दिनों और भी अनेक कवि सम्मेलनों में जाने का अवसर मिला, सबका यही हाल था। पचास श्रोता अगर किसी कवि सम्मेलन में सहभागी बन जाएं तो वह पांडाल या सभागार खचाखच भरा मान लिया जाता है । प्रतिभागी कवियों के दोस्त, रिश्तेदार भी इसी में शामिल होते हैं । साहित्य की समृद्धि के लिए वह कवि सम्मेलन अधिक ज्ञानवर्धक, प्रेरक, ऊर्जावान और प्रभावी माना जाता है, जिसमें पत्र-पत्रिकाओं में लिखने और छपने वाले 2,3 कवि भाग ले लेते हैं । वहां सुनने वाले भले बीस हों पर वो बीस, 20000 के बराबर होते हैं। इस बार के कवि सम्मेलन में दृष्टि बाधित कवयित्री डॉ० प्रेम सिंह मंच पर मौजूद कवियों के हृदय तक उतरने में कामयाब रही । पिछले साल डॉ० अल्का सिन्हा ने ये भूमिका निभाई थी।

यह सच है कि कविता का एक पक्ष मनोरंजन भी होता है पर कविताई मनोरंजन क्षणिक होता है। उसका असल उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को बदल देना है। जब भी एक बड़ा व्यक्ति किसी भी हास्य कवि से मिलता है तो पहली बार में उससे हंसते हुए बात करता है-"और सब ठीक, ठीक-ठाक चल रहा है... कुछ भी हो यार तुम आदमी बड़े मजेदार हो ।" उसका सारा कवित्व दो मिनट की हंसी के साथ उड़ जाता है। जबकि एक गंभीर कवि कितना भी अनुभव में कम हो, बड़े से बड़ा व्यक्ति भी उससे बात करने में झिझकता है । आजादी के बाद के बड़े कवियों में कोई ऐसा नाम नहीं शेष रहा था, जिसने राज्यसभा को सुशोभित न किया हो । लाल किला कवि सम्मेलन अगर अपनी पहचान कायम रख सका है तो इसलिए कि उसपर दिनकर, बच्चन, पंत, महादेवी, नवीन सरीखे कवियों के पदचाप मौजूद हैं।

पिछले दिनों प्रैस क्लब, दिल्ली में चालीस - पचास श्रोताओं के बीच एक कवि सम्मेलन एक छोटे से सभागार में आयोजित किया गया। मैं भी इसलिए उसमें शामिल था कि उसमें सब के सब श्रोता बहुत ही श्रेष्ठ कवि थे । मेरे एक शेर -

"जो सोचकर आए थे, उसे बदलना पड़ता है,
बंद कमरे में बहुत संभल के पढ़ना पड़ता है। "

इसे कई श्रोताओं ने रिकॉर्ड किया और फेसबुक पर एक ही दिन में उसे एक हजार से अधिक लोगों ने देख लिया। कमेंट भी सारे प्रेरक और उत्साहवर्धक थे । हास्य कवियों को देखने सुनने वालों की तादाद भले लाखों में हो परन्तु कभी उनके कमेंट्स पर जाकर पढ़िएगा, क्या - क्या लिखा मिलता है और कभी पत्र-पत्रिकाओं में लिखने वालों को भी देखिएगा क्या - क्या प्रेरक वाक्य लिखे होते हैं। साहित्य का चुटकुलों, मंच पर मीठे शब्दों , सुर-ताल और बुलंद आवाज से कोई लेना-देना नहीं है । अगर ऐसा होता तो साहित्य अकादमी के सारे पुरस्कार उन्हीं के हाथों में होते। साहित्य का नाता सिर्फ और सिर्फ व्यक्ति के विचारों से होता है। आवश्यकता है व्यक्ति तुकबंदी और चुटकुले छोड़कर साहित्य की तह तक जाने का प्रयास करें । साहित्य का उद्देश्य और उसकी बारीकियां सीखे । मंच पर अपना नाम कमाने की कोशिश में कविता से खुद को आत्मसात न करें। अब तो अलग से हास्य कवि सम्मेलन होने लगे हैं , वहीं अपना प्रदर्शन जितना बेहतर हो सके, करें ।

साहित्य एक पूरी सृष्टि के संवर्धन का दूसरा नाम है। कवि और साहित्यकार का नाम ईश्वर के बाद दूसरा है । अगर तुलसी या वाल्मीकि न होते तो आज घर-घर में राम न होते। राम - राम न हुआ करती । कबीर, निराला और गालिब न होते तो कविता भावनाओं और स्पंदन के खुशहाल बगीचे से ना गुजर रही होती । दुनिया में गमों पर खुशियां हावी ना हो रही होती। शांति, खुशी, अपने बच्चों की सही परवरिश और मनचाही मुराद का ही दूसरा नाम ही जीवन है । अगर व्यक्ति साहित्यकार या कवि होता है तो उसका दौलत से कोई लेना देना नहीं हुआ करता । निराला चाहते तो कई कोठियां खड़ी कर सकते थे। ग़ालिब के पास ढ़ेर सारी दौलत होने के बावजूद माह के आखिर में में रोटी के लिए तरशते थे । मंच की कविता आपको क्षणिक दौलत और शौहरत तो दे सकती है मगर स्थायी नहीं होती । चमकते कुर्ते और सतरंगी जाकिट में कभी झांककर देखें कि इस पैसे में कितने भूखों का पेट भर सकता था । अगर किसी को ईश्वर ने कविता की शक्ति दी है तो इसको तुकबंदी और चुटकुलों में न गंवाएं। साहित्य को उसके मर्म तक पहुंचाने का प्रयास करें।

रोहिणी, दिल्ली

ISSN:2583-8849